# संचयन (कक्षा IX)

**प्रश्न 1.** 'मेरा छोटा सा निजी पुस्तकालय' पाठ से हमें क्या संदेश मिलता है ?

**उत्तर-** पुस्तकों को मनुष्य का सबसे अच्छा साथी माना गया है। घर से बाहर की दुनिया में जो ज्ञान हमारी पहचान बनाता है, पुस्तकें उसी का अथाह भंडार हैं। पुस्तकें आने वाली कितनी ही पीढ़ियों के लिए ज्ञान को सुरक्षित रखती हैं। लेखक की कहानी यह सिद्ध करती है कि पुस्तकें हमारी सुख-दुख की साथी भी बन जाती हैं और कठिनतम परिस्थितियों का धैर्यपूर्वक सामना करने तथा हौसला बनाए रखने की आंतरिक शक्ति प्रदान करती हैं। इस पाठ से हमे यह संदेश मिलता है कि पुस्तकों को प्रेम और लगाव के साथ सहेज कर रखना चाहिए ; स्वाध्याय एक अच्छी आदत है तथा विद्यार्थियों और विज्ञ लोगों के बीच लेन-देन में पुस्तकें सर्वोत्तम उपहार हैं।

**प्रश्न 2.** 'हामिद खाँ' पाठ से हमे क्या शिक्षा मिलती है ?

**उत्तर-** लेखक की हामिद खाँ से मुलाकात, उनके बीच की बात-चीत तथा व्यवहार से यह स्पष्ट होता है कि कोई भी धर्म मनुष्य को घृणा करना नहीं सिखाता। आज समाज में जो भी सांप्रदायिक उन्माद या टकराव दिखाई देता है उसके पीछे मनुष्य की संकीर्ण सोच तथा धार्मिक कट्टरता ही है। वास्तव में धर्म मनुष्य की व्यक्तिगत आस्था एवं विश्वास का मामला है न कि सामाजिक व्यवहार का । समाज में मधुर-मुस्कान से अच्छा कोई साथी नहीं, सरलता से अच्छा कोई व्यवहार नहीं और मानवीयता से बड़ा कोई धर्म नहीं।

**प्रश्न 3.** सरदार पटेल के जीवन से आप किन जीवन-मूल्यों को अपनाना चाहेंगे ?

**उत्तर-** सरदार वल्लभ भाई पटेल देश को आज़ादी दिलाने वाले नेताओं में प्रमुख स्थान रखते हैं। वे अत्यंत जुझारू एवं दृढ़-निश्चयी प्रवृत्ति के नेता थे। त्याग, साहस, निष्ठा, ईमानदारी और देश-प्रेम जैसे मूल्य उनमें कूट-कूटकर भरे थे। इन गुणों को अपनाकर कोई भी सच्चा देश-प्रेमी तथा कर्तव्यनिष्ठ नागरिक बन सकता है। अतः मैं उनके जीवन से त्याग, साहस, निष्ठा, ईमानदारी और देश-प्रेम आदि मूल्य अपनाना चाहूँगा ।

**प्रश्न 4.** अपनी किन चारित्रिक विशेषताओं और मानवीय-मूल्यों के कारण गांधीजी देश-भर में लोकप्रिय हो गए?

**उत्तर-** गांधीजी सत्य और अहिंसा के पुजारी थे। कभी झूठ और छल का सहारा लेकर कोई कार्य नहीं करते थे । अपने सुख के लिए दूसरों को कष्ट देना उन्हे बिलकुल पसंद नहीं था। स्वाधीनता की लड़ाई को उन्होंने धर्मयुद्ध मानकर पूरी निष्ठा, लगन एवं ईमानदारी से संघर्ष किया । उनकी उदारता तथा सेवा भावना सभी को आकृष्ट करती थी। उनके व्यक्तित्व में नेतृत्व की ऐसी अद्भुत क्षमता थी कि देशवासी उनकी एक पुकार पर अपना सबकुछ त्यागकर उनके पीछे आ खड़े हुए।